



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 543]

नई दिल्ली, शुक्रवार, दिसम्बर 30, 2005/पौष 9, 1927

No. 543]

NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 30, 2005/PAUSA 9, 1927

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 30 दिसम्बर, 2005

सं. 114/2005-सीमा शुल्क (गै.टै.)

सा.का.नि. 755(अ).— सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) धारा 137 की उपधारा (3) के साथ पठित, की धारा 156 की उप-धारा (2) के खंड (ज) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्वारा निम्नलिखित नियम बनाती है, नामतः—

1. **संक्षिप्त शीर्षक एवं प्रारंभ**—(1) इन नियमों को सीमा शुल्क (अपराधों का प्रशमन) नियमावली, 2005 कहा जाए।

2. ये सरकारी राजपत्र में इनके प्रकाशन की तिथि से प्रभावी होंगे।

2. **परिभाषाएं**— इस नियमावली में जब तक संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो,

(क) "अधिनियम" का आशय सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) से है;

(ख) "आवदेक" का आशय किसी आयातक, निर्यातक अथवा किसी अन्य व्यक्ति से है लेकिन इसमें धारा 4 के तहत बोर्ड अथवा सीमा शुल्क आयुक्त द्वारा नियुक्त सीमा शुल्क अधिकारी शामिल नहीं होंगे;

(ग) "प्रशमन प्राधिकारी" का आशय उस मुख्य सीमा शुल्क आयुक्त से है जिसके अधिकार क्षेत्र में वह जगह आती हो जहां सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के तहत अपराध किया गया है अथवा किए जाने का आरोप है;

(घ) "फार्म" का आशय इस नियमावली के साथ संलग्न फार्म से है;

(ड.) "रिपोर्टिंग प्राधिकारी" का आशय उस सीमा शुल्क आयुक्त से जिसके अधिकारक्षेत्र में वह जगह आती है जहां उक्त अधिनियम के अंतर्गत अपराध किया गया है अथवा किए जाने का आरोप है अथवा ऐसे किसी अन्य अधिकारी से है जिसे इस संबंध में उस मुख्य आयुक्त द्वारा प्राधिकृत किया गया हो जिसके अधिकार क्षेत्र में वह जगह आती है जहां ऐसे अपराध किए गए हैं अथवा किए जाने का आरोप लगाया गया है;

(च) "धारा" का आशय इस अधिनियम की किसी धारा से है; तथा

(छ) ऐसे शब्द एवं अभिव्यक्तियां जिनका इस नियमावली में प्रयोग किया गया है और जो इसमें परिभाषित नहीं की गई हैं लेकिन अधिनियम में परिभाषित की गई हैं, उनका वही अभिप्राय होगा जो अधिनियम में उनके लिए निर्दिष्ट किया गया है।

3. फार्म एवं आवेदन का तरीका-(1) आवेदक या तो अभियोजन की संस्थापना के पूर्व अथवा इसके पश्चात्, अपराध के प्रशमन हेतु प्रशमन प्राधिकारी को इस नियमावली के साथ संलग्न फार्म में धारा 137 की उप-धारा (3) के तहत आवेदन करेगा।

स्पष्टीकरण: जहां कोई अपराध एक से अधिक प्रशमन प्राधिकारियों के क्षेत्राधिकार में आने वाले एक से अधिक स्थानों पर किया गया हो, तो ऐसे स्थान पर क्षेत्राधिकार रखने वाला मुख्य आयुक्त संक्षम प्राधिकारी होगा जहां जहां माल का मूल्य, अथवा अपवंचित शुल्क अथवा शुल्क अपवंचन के प्रयास की राशि अथवा गलत ढंग से दावा किए गए निर्यात प्रोत्साहन अथवा गलत ढंग से निर्यात प्रोत्साहन को दावा करने के प्रयास की राशि अन्य स्थानों से ज्यादा है।

3. नियम 3 के तहत आवेदन प्राप्त होने के पश्चात् की प्रक्रिया-

- (1) नियम 3 के तहत आवेदन प्राप्त होने पर, प्रशमन प्राधिकारी रिपोर्टिंग प्राधिकारी से इस आवेदन में दिए गए विवरणों अथवा ऐसी कोई अन्य सूचना, जिसे ऐसे आवेदन की जांच के लिए सगत समझा जाए, के संदर्भ में रिपोर्ट मांगेगा।
- (2) रिपोर्टिंग प्राधिकारी द्वारा ऐसी रिपोर्ट प्रशमन प्राधिकारी से संसूचना की प्राप्ति की तिथि से एक माह की अवधि के अंदर अथवा प्रशमन प्राधिकारी की अनुमति से बढ़ाई गई अवधि के अंदर प्रस्तुत की जाएगी।
- (3) प्रशमन प्राधिकारी उक्त आवेदन के विवरणों को ध्यान में रखकर, आदेश द्वारा, या तो नियम 5 की शर्तों के अनुसार प्रशमन राशि दर्शाते हुए आवेदन की अनुमति दे सकता है और उसे अभियोजन से उन्मुक्ति प्रदान कर सकता है या ऐसे आवेदन को अस्वीकृत कर सकता है। बशर्ते कि आवेदन तब तक अस्वीकृत नहीं किया जाएगा जब तक कि आवेदक को उसका पक्ष सुनने का अवसर न दिया गया हो तथा अस्वीकृत करने के आधारों का ऐसे आदेश में उल्लेख न किया गया हो।
4. उप-नियम (3) के तहत प्रत्येक आदेश की एक प्रति आवेदक को भेजी जाएगी
5. आवेदक, अपराधों के प्रशमन की अनुमति देने वाले उप-नियम (3) के तहत आदेश की प्राप्ति की तिथि से 30 दिन की अवधि के अंदर प्रशमन प्राधिकारी द्वारा दिए गए आदेश के अनुसार प्रशमन राशि का भुगतान कर
6. एक बार चुकाए जाने के बाद प्रशमन राशि उन मामलों को छोड़कर जहाँ न्यायालय ने अभियोजन से प्रदान की गई उन्मुक्ति को निरस्त कर दिया हो की प्रति अदायगी नहीं की जाएगी।
7. आवेदक अधिकार के रूप में यह दावा नहीं कर सकता कि उसके अपराध का प्रशमन किया जाएगा

5. **प्रशमन राशि का निर्धारण-** इस अधिनियम के विभिन्न उपबंधों के तहत अपराधों के प्रशमन के प्रयोजनार्थ प्रशमन राशि यहां नीचे दिए गए अनुसार होगी -

क्रम सं.	अपराध	प्रशमन राशि
1.	अधिनियम की धारा 132 के तहत विनिर्दिष्ट अपराध	प्रथम अपराध के लिए पचास हजार रुपये और इसके पश्चात् किए जाने वाले प्रत्येक अपराध के लिए राशि बढ़ाकर इस राशि का सौ प्रतिशत कर दी जाएगी।
2.	अधिनियम की धारा 133 के तहत विनिर्दिष्ट अपराध	प्रथम अपराध के लिए पचास हजार रुपये और इसके पश्चात् किए जाने वाले प्रत्येक अपराध के लिए राशि बढ़ाकर इस राशि का सौ प्रतिशत कर दी जाएगी।
3.	अधिनियम की धारा 134 के तहत विनिर्दिष्ट अपराध	प्रथम अपराध के लिए पचास हजार रुपये और इसके पश्चात् किए जाने वाले प्रत्येक अपराध के लिए राशि बढ़ाकर इस राशि का सौ प्रतिशत कर दी जाएगी।
4.	अधिनियम की धारा 135(1)(क) के तहत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के बीस प्रतिशत तक अथवा दस लाख रुपये, जो भी ज्यादा हो।
5.	अधिनियम की धारा 135(1)(ख) के तहत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के बीस प्रतिशत तक अथवा दस लाख रुपये, जो भी ज्यादा हो।
6.	अधिनियम की धारा 135(1)(ग) के तहत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के बीस प्रतिशत तक अथवा दस लाख रुपये, जो भी ज्यादा हो।
7.	अधिनियम की धारा 135 क के तहत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के बीस प्रतिशत तक अथवा दस लाख रुपये, जो भी ज्यादा हो।

6. अभियोजन से उन्मुक्ति प्रदान करने की प्रशमन प्राधिकारी की शक्ति-

- (1) यदि प्रशमन प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट है कि इस नियमावली के तहत अपराध के प्रशमन हेतु आवेदन करने वाले व्यक्ति ने उसके समक्ष कार्यवाहियों में सहयोग किया है तथा मामले से जुड़े तथ्यों का पूरा और सही खुलासा किया है तो वह ऐसे व्यक्ति को अपराध के प्रशासन के दायरे में आने वाले मामले के संदर्भ में सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के तहत किसी अपराध के लिए ऐसी शर्तों के अध्यधीन अभियोजन से उन्मुक्ति प्रदान कर सकता है जिन्हें लगाना वह उचित समझता हो।

7. कतिपय स्थितियों में अभियोजन से उन्मुक्ति वापस लिया जाना-

- (1) किसी व्यक्ति को नियम 6 के तहत प्रदान की गई उन्मुक्ति वापस ले ली जाएगी यदि ऐसा व्यक्ति नियम 4 के उप-नियम (3) के तहत प्रशमन प्राधिकारी द्वारा पारित किए गए प्रशमन आदेश में विनिर्दिष्ट की गई किसी राशि का ऐसे आदेश में विनिर्दिष्ट समय के अंदर भुगतान करने में असफल रहता है अथवा ऐसे किसी अन्य शर्त का पालन करने में असफल रहता है।

जिसके अध्यक्षीन उन्मुक्ति प्रदान की गई थी तथा इसके पश्चात् सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के उपबंध उस प्रकार लागू होंगे मानो ऐसी कोई उन्मुक्ति प्रदान नहीं की गई थी।

उपर्युक्त उप नियम (1) के तहत किसी व्यक्ति को प्रदान की गई उन्मुक्ति प्रशमन प्राधिकारी द्वारा किसी भी समय वापस ले ली जाएगी, यदि वह इस बात से संतुष्ट है कि ऐसे व्यक्ति ने प्रशमन कार्यवाहियों के दौरान किन्हीं विवरणों, सामग्री को छिपाया था अथवा झूठी गवाही दी थी और इसके पश्चात् ऐसे व्यक्ति पर ऐसे अपराध के लिए, जिसके संबंध में उसे उन्मुक्ति प्रदान की गई थी अथवा ऐसे किसी अन्य अपराध के लिए जिसके लिए ऐसा लगता हो कि प्रशमन कार्यवाहियों के संबंध में उसने ऐसा अपराध किया है, अभियोजन चलाया जा सकता है और इसके पश्चात् सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के उपबंध इस प्रकार लागू होंगे मानो ऐसी कोई उन्मुक्ति प्रदान नहीं की गई थी।

फार्म
(नियम 3 देखें)
अपराध के प्रशमन के लिए आवेदन

1. आवेदक का पूरा नाम एवं पता :
2. पत्राचार का पता:
3. (i) स्थायी लेखा संख्या (पैन):
(ii) आयात निर्यात कोड (आई ई सी) नं.:
4. आवेदक पर क्षेत्राधिकार रखने वाला सीमा शुल्क आयुक्त:
5. सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के उन उपबंधों का उल्लंघन जिनके लिए अभियोजन संस्थित किया गया है अथवा किये जाने का विचार है जिसके लिए प्रशमन हेतु आवेदन किया जा रहा है:
6. प्रशमन मामले के संबंध में प्रविष्टि बिल (बिलों)/लदान-पत्र (पत्रों)/न्यायनिर्णयन आदेश का विस्तृत विवरण:
7. जल्दी की तिथि, यदि कोई हो:
8. मामले के संक्षिप्त तथ्य तथा लगाए गए आरोपों का विवरण:
9. क्या कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है:
10. यदि हां, तो दावा किए गए शुल्क/निर्यात प्रोत्साहनों का विवरण:
11. क्या कारण बताओ नोटिस का न्यायनिर्णयन कर दिया गया है:
12. यदि हां, तो न्यायनिर्णयन के विवरण:
- (क) पुष्ट किए गए शुल्क की राशि
- (ख) वसूले जाने वाले/मना किए जाने वाले निर्यात प्रोत्साहन

- (ग) लगाया गया जुर्माना
 (घ) लगाया गया अर्थदण्ड
 13. क्या यह सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 के तहत पहला अपराध है। यदि नहीं, तो पिछले मामलों का विवरण:
 14. क्या इसी अपराध के लिए कोई कार्यवाही अपेक्षित है, यदि हां तो उसका विवरण:

आवेदक का नाम एवं पता

घोषणा

1. मैं वह प्रशमन राशि चुका दूंगा जो प्रशमन प्राधिकारी द्वारा सीमा शुल्क (अपराधों का प्रशमन) नियमावली, 2005 के नियम 4 के उप-नियम (3) के तहत प्रशमन प्राधिकारी द्वारा निर्धारित की जा सकती है।
2. मैं यह समझता हूँ कि मैं अधिकार के रूप में यह दावा नहीं कर सकता कि इस अधिनियम के तहत मेरे द्वारा किये गए अपराध का प्रशमन किया जाए।

आवेदक का नाम एवं हस्ताक्षर

सत्यापन

मैं-----पुत्र/पुत्री/पत्नी श्री-----निवासी-----विधिवत रूप से घोषणा करता हूँ कि मैं----- की हैसियत से यह आवेदन कर रहा हूँ और मैं इसे सत्यापित करने हेतु सक्षम हूँ।

यह कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार इस आवेदन के विवरण सही हैं तथा इस मामले के तथ्यों से संबंधित कोई भी सूचना छिपायी नहीं गई है। इस आवेदन के साथ लगे दस्तावेज मूल प्रतियों की सत्यप्रतियां हैं तथा वित्तीय लेन देन दर्शाने वाली सारणियां सही हैं और मेरे द्वारा विधिवत रूप से प्रमाणित हैं।

आज दिनांक -----(दिन)----- (माह)----- (वर्ष) को-----में सत्यापित किया गया।

आवेदक का नाम एवं हस्ताक्षर

स्थान:

तिथि:

[फा. सं. 450/67/2003-सी.शु. IV]

अनुपम प्रकाश, अवर सचिव

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

NOTIFICATION

New Delhi, the 30th December, 2005

No. 114/2005-CUSTOMS (N.T.)

G.S.R. 755(E).— In exercise of the powers conferred by clause (h) of sub-section (2) of section 156, read with sub-section (3) of section 137, of the Customs Act, 1962 (52 of 1962), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title and commencement.— (1) These rules may be called the Customs (Compounding of Offences) Rules, 2005.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.— In these rules, unless the context otherwise requires,—

- (a) “Act” means the Customs Act, 1962 (52 of 1962);
- (b) “applicant” means any importer, exporter or any other person, but shall not include officers of Customs as appointed by Board or Commissioner of Customs under section 4;
- (c) “compounding authority” means the Chief Commissioner of Customs, having jurisdiction over the place where the offence under the Customs Act, 1962, has been or alleged to have been committed;
- (d) “form” means the form appended to these rules;
- (e) “reporting authority” means the Commissioner of Customs, having jurisdiction over the place where the offence under the Act has been or alleged to have been committed or any other officer as may be authorized in this regard by the Chief Commissioner of Customs having jurisdiction over the place where such offence has been or alleged to have been committed;
- (f) “section” means a section of the Act; and

- (g) words and expressions used in these rules and not defined but defined in the Act shall have the respective meanings assigned to them in the Act.

3. **Form and manner of application.** - (1) An applicant may, either before or after institution of prosecution, make an application under sub-section (3) of section 137 in the form appended to these rules, to the compounding authority for compounding of the offence.

Explanation.- Where an offence has been committed at more than one place falling under the jurisdiction of more than one compounding authority, then the Chief Commissioner of Customs having jurisdiction over such place where the value of goods seized, or the amount of duty evaded or attempted to be evaded or amount of export incentives wrongly claimed or attempted to be claimed wrongly is more than others shall be the competent authority.

4. **Procedure on receipt of application under rule 3.** - (1) On receipt of an application under rule 3, the compounding authority shall call for a report from the reporting authority with reference to the particulars furnished in the application, or any other information, which may be considered relevant for examination of such application.

(2) Such report shall be furnished by the reporting authority within a period of one month or within such extended period as may be allowed by the compounding authority, from the date of receipt of communication from the compounding authority.

(3) The compounding authority after taking into account the contents of the said application may, by order, either allow the application indicating the compounding amount in terms of rule 5 and grant him immunity from prosecution in terms of rule 6 or reject such application:

Provided that application shall not be rejected unless an opportunity has been given to the applicant of being heard and the grounds of such rejection are mentioned in such order.

- (4) A copy of every order under sub rule (3) shall be sent to the applicant.

(5) The applicant shall, within a period of thirty days from the date of receipt of order under sub- rule (3) allowing the compounding of offences, pay the compounding amount, as ordered to be paid by the compounding authority and shall furnish the proof of such payment to the compounding authority.

(6) The compounding amount once paid shall not be refunded except in cases where the Court rejects grant of immunity from prosecution.

(7) The applicant cannot claim, as of right, that his offence shall be compounded.

5. Fixation of the Compounding amount .- For the purpose of compounding of offences under the various provisions of the Act , the compounding amount shall be as provided herein below.-

S. No.	Offence	Compounding amount
1	Offence specified under section 132 of the Act	Rupees fifty thousand for the first offence and to be increased by hundred per cent. of this amount for each subsequent offence.
2	Offence specified under section 133 of the Act	Rupees fifty thousand for the first offence and to be increased by hundred per cent. of this amount for each subsequent offence.
3	Offence specified under section 134 of the Act	Rupees fifty thousand for the first offence and to be increased by hundred per cent. of this amount for each subsequent offence.
4	Offence specified under section 135(1)(a) of the Act	Upto twenty per cent. of market value of the goods or Rupees ten lakhs whichever is higher.
5	Offence specified under section 135(1)(b) of the Act	Upto twenty per cent. of market value of the goods or Rupees ten lakhs whichever is higher.
6	Offence specified under section 135(1)(c) of the Act	Upto twenty per cent. of market value of the goods or Rupees ten lakhs whichever is higher.
7	Offence specified under section 135A of the Act	Upto twenty per cent. of market value of the goods or Rupees ten lakhs whichever is higher.

6. Power of Compounding authority to grant immunity from prosecution.-

The compounding authority, if he is satisfied that any person who has made the application for compounding of offence under these rules has co-operated in the proceedings before him and has made full and true disclosure of facts relating to the case, grant to such person, subject to such conditions as he may think fit to

impose, immunity from prosecution for any offence under the Customs Act, 1962 with respect to the case covered by the compounding of offence.

7. Withdrawal of Immunity from Prosecution in certain conditions.-

(1) An immunity granted to a person under rule 6 shall stand withdrawn if such person fails to pay any sum specified in the order of compounding passed by the Compounding authority, under sub-rule (3) of rule 4 within the time specified in such order or fails to comply with any other condition subject to which the immunity was granted and thereupon the provisions of the Customs Act, 1962 shall apply as if no such immunity had been granted.

(2) An immunity granted to a person under sub rule (1) above may, at any time, be withdrawn by the Compounding authority, if he is satisfied that such person had, in the course of the compounding proceedings, concealed any particulars, material or had given false evidence, and thereupon such person may be tried for the offence with respect to which immunity was granted or for any other offence that appears to have been committed by him in connection with the compounding proceedings and thereupon the provisions of the Customs Act, 1962 shall apply as if no such immunity had been granted.

FORM**(see rule 3)****(Application for compounding offence)**

1. Full Name and address of the applicant:
2. Address for communication:
3. (i) Permanent Account Number (PAN):
(ii) Import Export Code (IEC) No:
4. Commissioner of Customs having jurisdiction over the applicant:
5. The violation of provisions of Customs Act, 1962, against which prosecution is instituted or contemplated for which application of Compounding:
6. Details of Bill(s) of Entry /Shipping Bill(s)/Adjudication order in relation to the case for compounding:
7. Date of seizure, if any:
8. Brief facts of the case and particulars of the offence(s) charged:
9. Whether Show Cause Notice issued:
10. If yes, details of duty/export incentives demanded:
11. whether Show Cause Notice has been adjudicated:
12. If yes, adjudication details:
 - (a) Amount of duty confirmed:
 - (b) Export incentive to be recovered/denied:
 - (c) Fine imposed:
 - (d) Penalty imposed:
13. Whether this is the first offence under the Customs Act, 1962. If not details of previous cases:
14. Whether any proceedings for the same offence contemplated under any other law, if so the details thereof:

Name and Signature of the applicant.

DECLARATION

1. I shall pay the compounding amount, as may be fixed by the compounding authority under sub-rule (3) of Rule 4 of the Customs (Compounding of Offences) Rules, 2005.
2. I understand that I cannot claim, as of right that the offence committed by me under the Act shall be compounded.

Name and Signature of the applicant.

VERIFICATION

I, -----the son/daughter/wife of-----residing at -----do solemnly declare that I am making this application in my capacity as ----- and I am competent to verify it.

That the contents of this application are true to the best of my knowledge and belief and no information relevant to the facts of the case has been suppressed. The documents accompanying the application are true copies of the originals and the tables showing financial transactions are correct and are duly attested by me.

Verified today the ----- day of ----- (month), ----- (year) at -----.

Name and Signature of the applicant.

Place:

Date:

[F. No. 450/67/2003-Cus. IV]
ANUPAM PRAKASH, Under Secy.